74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

श्री जय प्रकाश सिंह वर्ष 2016–17 में धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती करके अपना जीवकोपार्जन कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, अलीगढ के सम्पर्क में आने के पश्चात् श्री सिंह ने पॉलीहाउस में सब्जियों की खेती करना प्रारम्भ किया साथही धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती में भी उन्नतशील किस्मों एवं नवीन तकनीकियों को अपनाया। उत्पादित सब्जियों को 250–300 ग्राहकों को डोर टू डोर बेंचने की भी व्यवस्था के परिणामस्वरूप अधिक आय का सृजन हुआ। वर्ष 2016–17 में श्री सिंह की दो हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आयरू0 89,000.00 थी, जो कि वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 6,96,000.00 हो गयी। जिससे रू0 6,07,000.00 आय में वृद्धि हो गयी। पता : कैथवारी, लोधा, अलीगढ़

श्री यादराम कुशवाहा वर्ष 2016–17 तक पुरानी पद्धति से धान, गेहूँ, सरसों की खेती करते थे जिससे श्रम के अनुरूप आमदनी काफी कम थी। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, अलीगढ के वैज्ञानिकों द्वारा पौध उत्पादन की तकनीकी प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण के पश्चात् श्री कुशवाहा द्वारा टमाटर, बैंगन, मिर्च, फूलगोभी, पत्ता गोभी आदि सब्जियों की पौध तैयार कर किसानों को बेंचने लगे। जिससे श्री कुशवाहा की आमदनी में कई गुना वृद्धि हुई साथ ही आस–पास के किसानों की आमदनी में गुणवत्तायुक्त पौध के प्रयोग से वृद्धि हुई।

वर्ष 2016–17 में श्री कुशवाहा की सभी स्रोतों एवं 2.5 हे0 क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय रू0 2,10,000.00 थी जो वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 4,65,000.00 हो गयी। पताः मानपुर, खैर, अलीगढ़

श्री सर्वदीप सिंह एक सीमान्त कृषक हैं। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, कन्नौज द्वारा आय दुगुनी करने की तकनीकियों के अर्न्तगत इन्होंने फसल चक्र में परिवर्तन किया और खरीफ प्याज–गेहूँ के स्थान पर खरीफ प्याज–मेंथा फसल चक्र को 0.16 हे0 क्षेत्रफल पर अपनाया तथा मक्का–आलू–मक्का के स्थान पर धनियाँ (हरी पत्ती)–आलू–मूंगफली की खेती 0.16 हे0 पर करना प्रारम्भ किया। धान–गेहूँ की खेती में हाइब्रिड व उन्नतशील प्रजातियों का समावेश किया। इसी के साथ पशुओं के भोजन, रोग व परजीवियों से रक्षा के उपाय अपनाएं तथा वर्मी कम्पोस्ट इकाई को प्रारम्भ किया।इस प्रकार श्री सिंह की 2016–17 में वार्षिक आय रू0 1,90,740.00 से बढ़कर वर्ष 2019–20 में रू0 3,47,936.00 हो गई।
पता : पचपुखरा, जलालाबाद, कन्नौज

श्री दिवाकर प्रताप सिंह एक छोटे किसान हैं जो पूरी तरह से कृषि तथा पशुपालन पर निर्भर हैं। गांव को वर्ष 2016–17 में अंगीकृत किये जाने के पूर्व इनकी वार्षिक आय कम थी जिसे वह अपने संसाधनों से बढ़ाना चाहते थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, कन्नौज द्वारा प्रदान की गई तकनीकी के उपरान्त वर्ष 2017–18 में इन्होंने ग्रीष्मकालीन मूँग के स्थान पर मक्का तथा ककड़ी के स्थान पर खीरा की खेती प्रारम्भ की। अकेले सब्जी मटर के स्थान पर सब्जी मटर + गेहूँ की खेती तथा आलू के साथ कद्दू की खेती करके कम उत्पादन लागत से उपज तथा आय दोनों में वृद्धि हासिल की। साथ ही देशी नस्ल के पशुओं के स्थान पर उन्नत नस्ल के पशुओं को अपनाकर व्यवसाय का रूप दिया।

श्री सिंह की वार्षिक आय वर्ष 2016–17 में रू0 3,39,384.00थी,जो खेती व पांच उन्नत नस्ल की भैंस तथा गाय से वर्ष 2019–20 में रू0 7,13,584.00 हो गई। पताः रौतामई, तालग्राम, कन्नौज

श्री राम किशोर वर्ष 2016–17 तक परम्परागत तरीके से धान, गेहूँ की खेती करते थे। जिससे उनको वांछित लाभ नहीं मिल पाता था। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये औरगेंदा की उन्नत प्रजातियों जैसे–पूसानारंगी, पूसाबसन्ती व जाफरी तथा सब्जियों की उत्पादन तकनीकी की जानकारी एवं प्रशिक्षण प्राप्त कर 1.5 एकड़ जमीन में खरीफ, रबी व जायद में उन्नत खेती के साथ–साथ गेंदा व सब्जियों की व्यवसायिक खेती करना प्रारम्भ किया। जिससे उनकी 1.0 हे0 क्षेत्रफल में आमदनी पहले की अपेक्षा दोगुनी हो गयी।

वर्ष 2016–17 में उनकी वार्षिक शुद्ध आय सभी स्रोतों से रू0 1,00,000.00 थी, जो वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू. 3,00,000.00 हो गई। पताः फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

श्री हरिशंकर दोनों पैरों से दिव्यांग हैं। वे खेती–किसानी के पैतृक कार्यों में थोड़ी मदद कर देते थे, उनके पास अपना कोई कार्य नहीं था। वर्ष 2015 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर ने उनके जज्बे को देखते हुए मुर्गी पालन की सलाह दी तद्नुसार प्रशिक्षण दिया। जिससे श्री हरिशंकर द्वारा मुर्गी पालन का कार्य प्रारम्भ किया गया।

वर्ष 2019–20 में 5000 मुर्गियों से बढ़कर आज 10000 मुर्गियां हैं व आज वह रू. 4,18,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं। पताः फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात

श्री पंकज कुमार प्रारम्भ में अपनी 1.5 हेक्टयर क्षेत्र में धान–गेहूँ की परम्परागत खेती कर रू. 1.00 लाख प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे थे। वह 2017 में कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये तथा वर्ष 2017–18 में उन्होंने फूलों व सब्जियों की खेती प्रारम्भ किया जिससे उनकी आमदनी दोगुनी से अधिक हो गयी।

श्री कुमार की वर्ष 2016–17 में सभी स्रोतों से शुद्ध आय रू0 1,15,000.00 से बढ़कर वर्ष 2019–20 में रू. 2,80,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं।

पताः फूलपुर, मैथा, कानपुर देहात

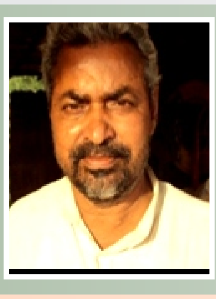

श्री संतोष कुमार वर्ष 2016–17 तक धान–गेहूँ की परम्परागत खेती कर शुद्ध लाभ रू. 1.10 लाख प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे थे। नौकरी से अवकाश प्राप्त कर कृषि विज्ञान केन्द्र, दलीपनगर के सम्पर्क में आये तथा प्रशिक्षण लिया तदुपरान्त् वर्ष 2016–17 से दुग्धोत्पादन व सब्जियों की खेती करना प्रारम्भ किया जिससे उनकी आमदनी दोगुनी हो गयी।

वर्ष 2016–17 में श्री संतोष कुमार जी की कुल शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष जहां रू0 1,10,000.00 थी, वर्ष 2019–20 में लगभग रू. 2,23,000.00 का शुद्ध लाभ प्रतिवर्ष प्राप्त कर रहे हैं।

पताः झम्मा निवादा, मैथा, कानपुर देहात

श्री नीरज शर्मा द्वारा पुरानी पद्धतियों से गेहूँ, धान, सरसों, बैंगन व आलू की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस द्वारा किसानों की दोगुनी आय के अंतर्गत चयनित ग्राम नगला गलिया के श्री शर्मा ने वैज्ञानिकों के सलाह पर अधिक उत्पादन देने वाली धान, गेहूँ व सरसों की नवीनतम् प्रजातियों के साथ फसल प्रबन्धन किया एवं उन्नत नस्लों के पशुपालन के द्वारा आमदनी में बढ़ोत्तरी दर्ज की गयी।

वर्ष 2016–17 में किसान की आय सभी मदों से रू0 1,80,650.00 रूपये थी, जो वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 3,55,785.00 हो गयी।

पताः नगला गलिया, सासनी, हाथरस

श्री रामगोपाल शर्मा एक छोटे किसान हैं जो कृषि एवं पशुपालन व्यवसाय से जुडे हैं। वर्ष 2016–17 में वह गेहूँ, धान, सरसों तथा मूंग एवं उर्द की पुरानी उन्नतशील प्रजातियों की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हाथरस के सम्पर्क में आने के बाद इन्होंने मुख्य फसलों की नई उन्नतशील प्रजातियों का चुनाव किया। फसलों को रोग एवं कीटों से बचाव हेतु तकनीकियों को अपनाया परिणाम स्वरूप फसलों की उपज तथा आय में वृद्धि हुई। इसी बीच श्री शर्मा ने देशी नस्ल की भैंस को बदलकर मुर्रा तथा लाल सिंघी गाय का पालन, दुग्ध की बिक्री तथा वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना की। नवीन तकनीक तथा वैज्ञानिक ढंग से खेती के कारण वर्ष 2019–20 में इनकी शुद्ध आय रू0 3,85,730..00 पहुंच गई जो वर्ष 2016–17 में मात्र रू0 2,75,540.00 थी। पताः अहबरनपुर, मुरसान, हाथरस

श्रीमती शाक्य परम्परागत खेती के रूप में धान, गेहूँ और आलू फसल उत्पादन के साथ दोना–पत्तल और मोमबत्ती आदि का कार्य करके जीविकोपार्जन कर रहीं थी। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, इटावा के वैज्ञानिकों से सम्पर्क में आने के बाद वैज्ञानिक ढंग से धान, गेहूँ और आलू की फसल का उत्पादन प्रारम्भ किया। साथ ही साथ अधिक आय के लिए पोषक वाटिका तथा प्याज की खेती में विशेष रूचि लेने लगी। अचार बनाने हेतु छोटी उद्यम इकाई की शुरूआत करके वर्ष भर आय प्राप्त कर रहीं हैं। जिससे वर्तमान में उनकी आय दो गुनी हो गयी है।

वर्ष 2017–18 से पूर्व उनकी शुद्ध आय रू0 61,600.00 थी जो वर्ष 2019–20 में रू0 1,42,000.00 शुद्ध आय प्राप्त हो रही है।

पताः मिलोई,जसवन्त नगर, इटावा

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

श्री आनन्द कुमार वर्ष 2017–18 से पूर्व 3.25 हेक्टेयर क्षेत्रफल पर धान, गेहूँ और सरसों की खेती स्थानीय तकनीकी के माध्यम से कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा ग्राम को चयनित करने के उपरान्त उन्नतिशील प्रजातियों जैसे धान की संकर प्रजाति VNR-2233, गेहूँ की प्रजाति HD2967, K-607 और सरसों की प्रजाति RH-749 अपनाकर उत्पादन बढ़ाने में सफलता प्राप्त की।

गेहूँ की प्रजाति HD-2967 तथा धान की सुगन्धा प्रजाति का बीज उत्पादित कर जनपद के कृषकों को रूपये 30–35 प्रति किग्रा0 की दर से बिक्री करके शुद्ध आय में वृद्धि दर्ज की। परिणामस्वरूप वर्ष 2016–17 में शुद्ध आय रू0 3,36,000.00 से बढ़कर वर्ष 2019–20 में रू0 6,18,000.00 हो गयी है। पताः मामन, भरथना, इटावा

श्रीमती मिथलेश कुमारी ने वर्ष 2010–11 में कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के वैज्ञानिकों की सलाह से 80–100 कुन्तल वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन प्रारम्भ किया और उसको अपनी खेती में प्रयोग करके आलू का उत्पादन 360 कु0/हे0 तक प्राप्त किया। वर्ष 2016–17 में पुनः वैज्ञानिकों की सलाह पर क्राइजेन्थिमम, शिमला मिर्च की खेती प्रारम्भ की जिसके परिणामस्वरूप आमदनी दो गुना बढ़ गयी।

वर्ष 2016–17 में कुल 4.6 हे0 क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय जहांरू0 4,11,000.00 प्रति वर्ष थी वह वर्ष 2018–19 में बढ़कर रू0 11,10,000.00 प्रतिवर्ष हो गई।

पताः बाड़ेपुर, बेवर, मैनपुरी

श्री राम औतार वर्ष 2016–17 में अपनी खेती के साथ–साथ भैंस पालन का कार्य कर रहे थे। कृषि विज्ञान केन्द्र, मैनपुरी के सम्पर्क में आने के बाद उन्होनें डेयरी इकाई की स्थापना के साथ पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य पर ध्यान दिया। उन्नति खेती तथा पशुओं के गोबर से वर्मी कम्पोस्ट इकाई चलाने के फलस्वरूप उनकी आय दुगनी होने में सफलता मिली।

वर्ष 2016–17 में दो भैंस तथा सम्पूर्ण खेती (1.10 हे0) से कुल आय रू0 92,850.00 प्रति वर्ष की थी जो वर्ष 2019–20 में कुल शुद्ध आय रू. 2,83,840.00 हो गई।

पताः भदौरा, पुल्तानगंज, मैनपुरी

श्री राम सिंह वर्ष 2016–17 से पहले परम्परागत खेती करते थे जिसमें धान, गेहूँ एवं सरसों शामिल थी। वर्ष 2016–17 में जब वे कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के सम्पर्क में आये तो केन्द्र के वैज्ञानिकों के सलाह पर समन्वित कृषि प्रणाली स्थापित किया तथा धान–गेहूँ के साथ टिशू कल्चर केला प्रजाति जी–9 की खेती की शुरूआत की जिससे उनकी आमदनी दोगुनी सेअधिक हो गयी। वर्ष 2016–17 में श्री सिंह की परम्परागत खेती से 3.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल सें कुल आय रू0 3,88,850.00 प्रति वर्ष थी जो वर्ष 2018–19 में रू0 8,15,000.00 हो गयी।

पताः भारतपुर, हस्वा, फतेहपुर

श्री उमाशंकर तिवारी वर्ष 2016–17 से पहले पशुपालन के साथ परम्परागत तरीके से धान एवं गेहूँ की खेती करते थे। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फतेहपुर के सम्पर्क में आने पर उन्होनें फसल पद्धति में परिवर्तन कर तथा नवीन कृषि तकनीकी अपनाकर उन्नत प्रजातियों के गेहूँ, चना, सरसों, मूँग व मूँगफली की लाइन में बुवाई, बीज उपचार तथा सल्फर एवं माइक्रोराइजा का प्रयोग किया और अपने पशुपालन व्यवसाय को बढ़ाया जिससे उनकी आय में वृद्धि होने लगी।

श्री तिवारी की वर्ष 2016–17 में 1.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय रू0 2,48,500.00 थी जो वैज्ञानिक तरीके से खेती व पशुपालन से वर्ष 2019–20 में रू0 7,02,500.00 हो गयी।

पताः कटोघन, एरायां, फतेहपुर

श्री बलवंत सिंह वर्ष 2017–18 से पहले धान, गेहूँ एवं सरसों की खेती करते थे परन्तु वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आये और वैज्ञानिकों की सलाह पर धान की संकर प्रजाति, गेहूँ की डी0बी0डब्लू–17, के0–1006 व एच0डी0–2967 प्रजाति, सरसों की आर0एच–749 व आर्शीवाद के साथ जैव उर्वरक (हालो एजो + हालो पी0एस0बी0 + हालो जिंक) एवं माइक्रो न्यूट्रिशन का प्रयोग किया। आय वृद्धि हेतु मेंथ की खेती प्रारम्भ कीजिसके परिणामस्वरूप उनकी आय दुगुनी हो गयी।

वर्ष 2016–17 से पहले श्री सिंह की कुल शुद्ध आय रू0 89,440.00 प्रति वर्ष थीजो वर्ष 2018–19 में रू0 3,13740.00 प्रति वर्ष हो गयी। पताः दर्वेशपुर, बवना, हरदोई

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

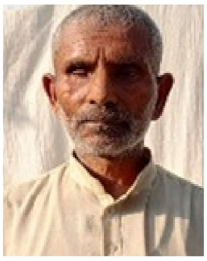

श्री महा सिंह वर्ष 2016–17 में अपने उपलब्ध संसाधनों में धान–गेहूँ एवं सरसों की खेती करते थे। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, हरदोई के सम्पर्क में आने से फसल अवशेष प्रबन्धन, नाडेप कम्पोस्ट, बायो डिकम्पोजर एवं हरी खाद के साथ फसल सुरक्षा प्रबन्धन किया। इसके अतिरिक्त मेंथा, आलू तथा घुईयां की खेती को अपनाकरअपनी आय में आशातीत वृद्धि दर्ज की।

वर्ष 2016–17 से पहले श्री सिंह की कुल शुद्ध आय रू0 1,85,000.00 प्रति वर्ष थी जो वर्ष 2018–19 में रू0 3,80,850.00 हो गयी।

पताः मुजाहिदपुर,बवन, हरदोई

श्री महेश कुमार वर्ष 2016–17 के पहले परम्परागत खेती करते थे जिससे अत्यधिक श्रम के बावजूद उनकी आमदनी काफी कम थी। परन्तु वर्ष 2017–18 में उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर खीरी के वैज्ञानिकों की सलाह पर वैज्ञानिक विधि से परवल एवं गन्ने की खेती के साथ बुवाई की विधि, उर्वरक की मात्रा तथा रोग प्रबन्धन किया परिणामस्वरूप उनकी आमदनी दुगुनी हो गयी।

वर्ष 2016–17 में श्री कुमार की 1.25 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय जहां पर रू0 1,54,500.00 थी वह 2019–20 में बढ़कर रू0 3,15,000.00 हो गयी।

पताः झकरा पिपरी, फूलभर, लखीमपुर खीरी

श्री सोवरन लाल वर्ष 2017–18 के पहले परम्परागत तरीके से गेहूँ एवं गन्ने की खेती करने के कारण बहुत ही कम आमदनी प्राप्त होती थी। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, लखीमपुर खीरी के सम्पर्क में आने से गन्ने की प्रजाति, अन्तः फसली खेती, बुआई तकनीक में बदलाव के साथ उर्वरक प्रबन्धन, जल प्रबन्धन तथा खरपतवार नियन्त्रण के उपायों को अपनाया तथा पशुओं से अधिक दुग्धउत्पादन हेतु उनकी देख–रेख तथा भोजन पर विशेष ध्यान दिया जिससे उनकी आय में वृद्धि हुई।

वर्ष 2017–18 में श्री सोवरन लाल की 1.2 हेक्टेयर भूमि से कुल शुद्ध आय रू0 98,500.00 थी जो नई तकनीकी के अंगीकरण से वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 2,05,600.00 हो गयी। पताः बेहता, लखीमपुर खीरी

श्री रवी चन्द्र सिंह वर्ष 2017–18 से पहले गेहूँ, मक्का एवं आलू की खेती करते थे जिससे आमदनी कार्य के अनुरूप नहीं मिल पा रही थी परन्तु वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फर्रूखाबाद के सम्पर्क में आने के पश्चात् अपनी खेती में गर्मी की मूँगफली के साथ वैज्ञानिक विधि से मक्का, आलू एवं गेहूँ की खेती करना शुरू किया जिससे वर्ष 2018–19 में आमदनी दोगुनी हो गयी।

वर्ष 2017–18 से पूर्व श्री सिंह की 1.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल से कुल शुद्ध आय रू0 1,20,543.00 होती थी, जो नवीन तकनीकियों को अपनाने से वर्ष 2018–19 में रू0 2,50,475.00 हो गयी।

पताः नियामतपुर ठकुराम, कमलगंज, फर्रूखाबाद

श्री सालिग राम वर्ष 2016–17 तक स्थानीय ज्ञान तथा प्रजातियों को अपनाकर खेती करते थे जिससे उनकी आमदनी खेती के अच्छे प्रबन्धन के बावजूद लाभकारी नहीं थी। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फर्रूखाबाद के सम्पर्क में आने से पुरानी प्रजातियों को बदल कर मक्का की संकर प्रजाति डी0के0सी0–9108, आलू की प्रजाति–के0 पुखराज एवं हरा उर्द की प्रजाति–आई0पी0एम0 2–14 से खेती करने से आमदनी में दोगुना तक इजाफा हुआ।

वर्ष 2016–17 में कुल शुद्ध आय 1.0 हेक्टेयर क्षेत्रफल में रू0 1,53,500.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो तकनीकी अपनाने से वर्ष 2019–20 में 3,15,000.00 हो गई।

पताः नगला जैतपुर, बारहपुर, फर्रूखाबाद

श्री दिवान सिंह वर्ष 2017–18 में 0.6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में गेहूँ एवं बाजरा की खेती करते थे तथा परिवार के भरण–पोषण हेतु फैक्ट्री में काम करना पड़ता था। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, फिरोजाबाद के सम्पर्क में आने के पश्चात् चपन कद्दू की खेती प्रारम्भ तथा अन्य फसलों में उन्नत तकनीकी का प्रयोग करने से आमदनी वर्ष 2019–20 में दोगुनी तक पहुंच गयी।

वर्ष 2016–17 में 0.6 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कुल शुद्ध आय रू0 60,000.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो तकनीकी अपनाने से वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 1,30,000.00 हो गई।

पताः दिनौली,टुण्डला, फिरोजाबाद

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

श्री राजवीर सिंह द्वारा वर्ष 2016–17 में गेहूँ एवं बाजरा की खेती करते थे। जिससे उनको आमदनी संतोषजनक प्राप्त नहीं हो पा रही थी। वर्ष 2017–18 में श्री सिंह द्वारा फसल पद्धति बाजरा–गेहूँ–मूँग एवं बाजरा–आलू–मूँग के साथ हरी खाद, बायो एजेंट, संतुलित उर्वरक एवं अच्छी नस्ल के पशुपालन से आय में दोगुना तक वृद्धि दर्ज की।

वर्ष 2016–17 में 3.2 हेक्टेयर क्षेत्रफल में कुल शुद्ध आय रू0 3,50,000.00 प्रति वर्ष प्राप्त हो रही थी जो आलू की खेती तथा पशुपालन को अपनाने से वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 7,50,000.00 हो गई ।

पताः खेरिया हजरतपुर, टुण्डला, फिरोजाबाद

श्री मिथलेश शर्मा अपनी 2.0 हे0 कृषि योग्य भूमि में धान, गेंहू, दलहन एवं तिलहन की खेती कर रहे थे। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली द्वारा जब इस गांव में कृषकों की आय दोगुनी करने के सम्बन्ध में कृषि तकनीकी हस्तातंरण कार्य प्रारम्भ किया गया तत्पश्चात श्री शर्मा ने कृषि की उन्नत तकनीकी जैसे संतुलित उर्वरक प्रबन्धन, एकीकृत नाशी जीव प्रबन्धन, वर्मीकम्पोस्ट, कार्बनिक पदार्थों का मृदा स्वास्थ्य सुधार में प्रयोग एवं धान, गेंहू, दलहन एवं तिलहन की उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग कर अपनी फसलों के उत्पादन अभूतपूर्व वृद्धि प्राप्त की।

इस तरह से श्री शर्मा जी की वार्षिक शुद्ध आय जो वर्ष 2016–17 मेंरू0 78,950.00 थी जो बढ़कर वर्ष 2019–20 में रू0 1,76,750.00 हो गयी है। पताः आशानन्दपुर, सतांव, रायबरेली

श्री फूलचन्द अपनी 1.25 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि में धान, गेंहू के साथ मुख्य रूप से टमाटर की खेती कैशक्राप के रूप में करते हैं। टमाटर की फसल में फली छेदक कीट की वजह से उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता था। वर्ष 2017–18 में कृषि विज्ञान केन्द्र, रायबरेली द्वारा जब इस गांव में कृषकों की आय दोगुनी करने के सम्बन्ध में कृषि तकनीकी हस्तातंरण कार्य प्रारम्भ किया गया तत्पश्चात् श्री फूलचन्द ने कृषि की उन्नत तकनीक जैसे संतुलित उर्वरक प्रबन्धन, टमाटर के पौधों के बीज उचित दूरी, उन्नतशील प्रजातियों का प्रयोग एवं फली छेदक कीट से बचाव के लिये फेरोमेनट्रैप का प्रयोग कर टमाटर के उत्पादन में वृद्धि प्राप्त की। अन्य फसलों में भी तकनीकी के प्रयोग से उपज एवं आय में वृद्धि हासिल की।

वर्ष 2016–17 में इनकी वार्षिक शुद्ध आय रू0 1,20,000.00 थी जो वर्ष 2019–20 में बढ़कर रू0 1,69,100.00 हो गई है। पताः आशानन्दपुर, सतांव, रायबरेली

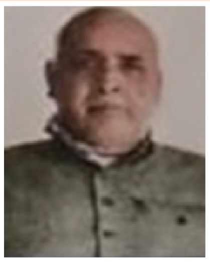

श्री बजरंग सिंह पुत्र स्व0 श्रीननकू सिंह काजन्ममार्च 13, 1959 ग्रामकोरसम, जनपदफतेहपुर(उ0प्र0) कृषक परिवार में हुआ। श्रीबजरंग सिंह जी ने जूनियर हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त कर, पिता जी के साथ कृषि योग्य 5.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री बजरंग सिंह विश्वविद्यालय में सितम्बर 05, 1992 से चन्द्रशेखर आजाद कृषक समिति सदस्य के रूप में सम्पर्क में आये तथा तब से लगातार विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीनतम तकनीकियों को अपनाकर अपनी आय में तीन गुना से अधिक की वृद्धि की और विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक को जनपद के 600 से अधिक कृषकों को अवगत कराया। श्री बजरंग सिंह के कृषि कार्यों में उत्कृष्ट योगदान हेतु वर्ष 2002 में चौधरी चरण सिंह सम्मान तथा वर्ष 2019 उ0प्र0 के महामहिम राज्यपाल द्वारा भी सम्मानित किये गये। श्री बजरंग सिंह से आस पास के कृषक प्रेरणा लेकर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीक को अपना कर लाभान्वित हो रहे है। पताः कोरसम, जनपद फतेहपुर

कैप्टन राजेन्द्र प्रसाद पचौरी द्वारा इण्टर मीडियट की शिक्षा प्राप्त कर भारतीय सेना मे फरवरी 27, 1982 में देश की सेवा में योगदान किया तथा जूलाई 27, 2014 को सेना से सेवानिवृत्त के उपरान्त पिता जी के साथ कृषि योग्य 6.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री पचौरी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से वर्ष 2017 सेसम्पर्क में आये तथा विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न फसलों की नवीनतम प्रजातियों को अंगीकृत कर बीज उत्पादन कर लाभ प्राप्त किया। इससे प्रेरित होकर श्रीपचौरी को मलिका किसान उत्पादन कम्पनी लिमिटेड (एफ0पी0ओ0) 11 जूलाई, 2018 गठन किया गया।

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित गेहूँ की प्रजातियों (के–1317, के–607 व के–1008) का बीज उत्पादन कर कोमलिका किसान उत्पादन कम्पनी लिमिटेड के कृषकों को उपलब्ध कराकर उक्त प्रजातियों के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा दोगुने से अधिक लाभ अर्जित किया। पताः भमरौला, अलीगढ

श्री धर्मपाल सिंह पुत्र श्री स्व0 श्रीसुरेन्द्र सिंह का जन्म जुलाई 20, 1972 ग्राम सखाटप्पा, टिगाई, जिला कानपुर देहात (उ0प्र0) कृषक परिवार में हुआ। श्री धर्मपाल सिंह इन्टरमीडिएट विज्ञान वर्ग तक की शिक्षा प्राप्त कर पिताजी के साथ कृषि योग्य 8.00 एकड़ भूमि पर खेती कर जीवकोपार्जन प्रारम्भ किया। श्री धर्मपाल सिंह विश्वविद्यालय में संचालित अखिल भारतीय समन्वित एकीकृत कृषि प्रणाली योजना के सम्पर्क में वर्ष 2013–14 में आये तथा योजना द्वारा विकसित कृषि प्रणाली प्रारूप (फसल डेयरी) तकनीक को अपनाकर विगत चार वर्षो में दुगनी से अधिक आय प्राप्त की तथा अपने गांव के आस–पास के 450 से अधिक कृषकों को कृषि की नवीनतम तकनीक की जानकारी देकर लाभान्वित भी किया है, जिससे आस–पास के कृषक प्रेरणा लेकर लाभान्वित हो रहे है। पता : टिगाई, जिला कानपुर देहात

74 वें

स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र अलीगढ़

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र हाथरस

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र लखीमपुर खीरी

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र इटावा

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र फिरोजाबाद

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र फर्रूखाबाद

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र कन्नौज

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र रायबरेली

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र मैनपुरी

74वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र फतेहपुर

चन्द्रशेखर आजाद
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र हरदोई

74 वें
स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र कासगंज

74 वें स्वतंत्रता दिवस 2020 के पावन पर्व पर
कृषक सम्मान समारोह

वर्ष 2019–20 में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर कार्य क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु सम्मानित कृषक

कृषि विज्ञान केन्द्र कानपुर देहात

चन्द्रशेखर आजाद
कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर